सन्तजनों व सिद्धजनों का काव्य

गुरु नानकदेव—परिचय

गुरु नानकदेव [लगभग १४६९-१५३९] सिख सम्प्रदाय के संस्थापक थे जिनका जन्म तलवण्डी नामक ग्राम में हुआ था जिसे बाद में उनके सम्मान में ननकाना साहिब कहा जाने लगा। यह ग्राम वर्तमान समय के पाकिस्तान में स्थित है। गुरु नानकदेव द्वारा रचित ९७४ 'शबद' अर्थात् भजन या पद, सिखों के धर्मग्रन्थ, 'गुरु ग्रन्थसाहिब' में सम्मिलित हैं। यद्यपि गुरु नानकदेव संस्कृत, हिन्दी, फ़ारसी जैसी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे, फिर भी उन्होंने अपने 'शबद', सन्तभाषा में ही लिखे, एक ऐसी भाषा जो अनेक बोलियों तथा भाषाओं से मिलकर बनी है जो उत्तर व उत्तर-पश्चिमी भारत की मिली-जुली भाषा है। इसी कारण गुरु नानकदेव की सिखावनियाँ बहुत लोगों तक पहुँच सकीं।

ईश्वर द्वारा रचित सृष्टि में शान्ति, प्रेम, सेवा तथा परस्पर सम्मान से सम्बन्धित अपनी शिक्षाओं को लोगों तक पहुँचाने के लिए गुरु नानकदेव ने सम्पूर्ण भारत व भारत के बाहर यात्राएँ कीं। अपने आनन्दमय काव्य की शिक्षा उन्होंने कीर्तन गाने की परम्परा द्वारा तथा यह दर्शाकर प्रदान की कि सच्ची भक्ति ही साक्षात् ईशानुभूति करने का मार्ग है।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।